Vol 4 Issue 2 March 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-2 | March-2014
Available online at www.isrj.net

'स्वच्छन्दतावाद' की अवधरणा

नीरू

दयाल सिंह सांध्य कॉलेज, दिल्ली सिरसपुर, दिल्ली

***सारांश* :-** काव्यात्मक स्तर पर हम जिस स्वच्छन्दतावाद को विवेचित करते हैं, वह, जैसा कि अनेक विद्वानों ने कहा है, मूलतः अंग्रेजी भाषा के 'रोमाण्टिसिज्म' का भावानुवाद है।[1] 'रोमाण्टिसिज्म' की व्युत्पत्ति जिस 'रोमांस' शब्द से हुई हैं, उसके प्रांरभ पर दृष्टिपात करना भी आवश्यक है। साहित्यिक लैटिन भाषा के लिखित रूप के विपरीत जो जनभाषा अथवा सस्ती भाषा प्रचलित थी उसी के लिए प्राचीन प्रफेंच शब्द रोमोंज (Romanz) का अर्थ सिपर्फ उपन्यास से है चाहे विषयवस्तु अथवा शिल्प की दृष्टि से उसमें कितना ही वैविध्व क्यों न हो जबकि आधुनिक अंग्रेजी में रोमांस ;त्वउंदबमद्ध ;प्राचीन प्रफेंच भाषा के (Roman) से गृहीतद्ध का अर्थ वर्णनात्मक संयोजन अथवा प्रेम संदर्भ अथवा प्रेम–संदर्भों पर आधरित घटनाओं को समेटे हुए अपने रूप में नितान्त आदर्शवाद हो और इस प्रकार 'टू रोमांस' क्रियापद के रूप में रोमांस का अर्थि हो गया, एक ऐसी कहानी की रचना जिसका यथार्थ या वास्तविकता से कोई संबंध न हो।[2]

प्रस्तावना :

'रोमांस' का अर्थ रोमांस भाषा में लिखी कृषि के रूप में भी प्रचलित रहा है। ''विभिन्न ऐतिहासिक समय–खण्डों में इंडो–यूरोपियन भाषा परिवार की इटेलिक शाखा के उपसमूह की लैटिन भाषा से सभी रोमांस भाषाओं का उद्भव हुआ।.... इस भाषा– परिवार की प्रमुख भाषाओं के अन्तर्गत प्रफेंच, इटेलियन, स्पेनिश, पोर्तगीज और रोमानियन इत्यादि आती हैं।''[3]

'रोमांस' शब्द की उत्पत्ति का सम्बन्ध रोम साम्राज्य की जनपदीय बोली 'लिंवा रोमानिया' से भी माना गया है। एलकॉक ने इस सम्बन्ध में लियाा है कि 'रोमांस' शब्द रोमवासियों के लिए प्रयोग किया जाता था। यही बाद में एक भाषा विशेष के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। रोम साम्राज्य के बाहर बोली जाने वाली एक भाषा 'बारबेरी' के विपरीत जो भाषा प्रचलित थी उसके लिए 'रोमानिया' शब्द का प्रचलन इतिहास में मिलता है। बाद में जब बारबेरी को जर्मन भाषी कबीलों की भाषा समझा जाने लगा तो लेटिन को अपने रूप में बोलने वालों को रोमानी कहा जाने लगा। बाद में यही शब्द 'रोमानिस' बनकर प्रचलित हुआ और यही शब्द प्राचीन प्रफेंच भाषा में 'रोमांस' ;त्वउंद्रद्ध और अंग्रेजी में इसका उच्चारण 'रोमांस' शब्द के रूप में किया जाने लगा।

इस प्रकार अंग्रेजी के 'रोमांटिसिज्म' का भावानुवाद ही 'स्वच्छंदतावाद' के रूप में प्रचलित हुआ। 'दि शार्टर आक्सपफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी' में स्वच्छंदतावाद को व्याख्यायित करते हुए लिखा गया है कि, ''यह एक रोमांटिक पफैन्सी अथवा विचार हो सकता है। यह रोमांस अथवा रोमांटिक दृष्टि की ओर उन्मुख एक प्रवृत्ति हो सकती है। और यह रोमांटिक सम्प्रदाय की कला, साहित्य तथा संगीत की विशेषताओं का द्योतक हो सकता है।''[4]

'हिंदी साहित्य कोश'' में कहा गया है कि ''साहित्यिक उदारवाद ही रोमांटिसिज्म है अर्थात् प्राचीन शिष्ट तथा क्लासिक परिपाटी के विरोध में उठ खड़ी होने वाली विचारधरा को रोमांटिसिज्म कहा जाता है।''[5]

काव्य रचना के विभिन्न कालों में, स्वच्छंदतावाद जहां कही उभरा और उसने आकार लिया, वहां प्रम्परागत काव्य रूपों और मूल्यों से, उसमें अलगाव की प्रवृत्ति दिखाई देना एक स्वाभाविक रचनाधर्मिता कही जा सकती है। पाश्चात्य काव्य समीक्षा में विषयीगत और विषयगत आधर पर परम्परावाद और स्वच्छंदतावाद की प्रवृत्तियों में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। यदि पाश्चात्य काव्य–समीक्षाकों के वैचारिक आधर को देखा जाए तो, ''स्वच्दंतावादी काव्य में कल्पना से उद्भूत हुए भाव को प्रधनता मिलती है। और रचनाकार की आत्मा इस कल्पनाशक्ति को अर्थ देती हुई इसका निर्देश करती है''।[6]

यूरोप में स्वच्छंदतावादी कविता का समय 1782 ई. से 1832 ई. तक माना जाता है। इस आंदोलन ने यूरोप की कविता को शास्त्रागत रूढ़ियों से मुक्त कर, आन्तरिक स्तर पर, एक ऐसी बनावट दी, जिसके साथ कही तरलता और मधुरता के संवेग जुड़े हुए थे। जिन रचनाकारों ने इस काव्य आंदोलन को सपफल बनाया, उनमें थामसन, क्रेज, वर्ड्सवर्थ, शैली, कालरिज, कीट्स इत्यादि प्रकृति के निकट से जुड़े, प्रेम और सौन्दर्य के कवि प्रमुख थे।

सन् 1797 ई. में कालरिज एवं वर्ड्सवर्थ का संयुक्त प्रयास 'लिरिकल बेलेडस' नामक काव्य संग्रह के रूप में सफल हुआ। ''इन कविताओं की रचना का उद्देश्य यह था कि शास्त्रीय काव्य सि(ान्तों के शिकंजे में तड़पफती हुई काव्य की आत्मा को बंध्न मुक्त करने का आदर्श उपस्थित किया जाए और लोगों को यह बात स्पष्ट तौर से बतला दी जाए कि स्वच्छन्द और उन्मुक्त वातावरण में पलकर कविता कितनी स्पफूर्ति– प्रदायिनी और बल–संचारिणी हो सकती है।''[7]

'लिरिकल बेलेडस' का प्रकाशन अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके विषय में कालरिज ने लिखा कि जिस काल में वर्ड्सवर्थ और मुझे दोनों को पड़ोस में रहने का अवसर मिला था उसके प्रथम वर्ष में हम लोग कविता के दो प्रमुख तथ्यों के उफपर प्रायः बातें करते थे... प्रकृति की वास्तविकता की अनुरूपता धरण करते भी काव्य की पाठकों में सहानुभूति की उद्रेक–शक्ति तथा कल्पना के रंग भरने वाली शक्ति जो प्रकृत वस्तु में एक विचित्रा नूतनता ला देती है। प्रकाश और छाया तथा चाँदनी और सूर्यास्त की आभा के सदृश परिचित प्राकृतिक दृश्य में भी विचित्राता ला देती है।''[8]

वर्ड्सवर्थ की स्वच्छंदतावादी रचनाओं में दो मूलभूत धरणाएँ रही हैं। ''एक धरणा का सम्बन्ध मनुष्य से था और दूसरे का प्रकृति से।... प्रथम धरणा तो उस युग की विशिष्टता थी, उस युग के वातावरण में, हवा में तैर रही थी और दूसरी धरणा को वर्ड्सवर्थ ने उसी के (Back to nature) प्रकृति की ओर लौट चलो, वाले नारे से लिया था। प्रकृति और मनुष्य दोनों के प्रति उसके ह्रदय में अपार द्दष्टी के भाव थे।''[9]

कालरिज द्वारा बुध्दि, कल्पना एवं मनोवेगों को रचनाकार की प्रतिभा के सहायक तत्त्वों के रूप में स्वीकार किया गया। कालरिज ये मानते हैं कि किसी भी कला का उद्देश्य भावों को जागृत कर, सह्रदय के ह्रदय में सौंदर्य के माध्यम से आनन्द उत्पन्न करना है। सौंदर्य का संबंध कालरिज ने कल्पना के साथ स्थापित किया।

कीट्स ने, ह्रदय के प्रेम की पवित्राता तथा कल्पना के सत्य के अतिरिक्त किसी बात को जानने की इच्छा नहीं की। स्वच्छंदतावाद के संबंध में कीट्स के कुछ अपने विचार थे। कीट्स ने स्वच्छंदतावाद को अहं का उदात्तिकृत रूप माना है। कीट्स के अनुसार ''स्वच्छंदतावाद ऐसी विचारधरा है जिसमें मौलिक एवं स्पष्ट व्यक्तित्व का अंकन ही, व्यक्तिवाद में अचल विश्वास हो, जिसमें कविता का मुख्य उपयोग आत्म–प्रस्पफुटन, आत्म–विश्लेषण, आत्म–निर्भरता और अंत में कभी–कभी दिखावट एवं आत्म स्वीकृति के लिए हो।

स्वच्छंदतावाद का प्रथम एंव अन्तिम धर्म ईश्वर सदृश ''मैं'' का समर्थन करना हैं जो काव्य जगकत का निर्माण करता है और काव्य के निर्माण करने के साथ–साथ स्वयं अपनी ही सृष्टि करता है।[10]

इन सभी कवियों ने, कहीं न कहीं कल्पना के माध्यम से, स्वप्न लोक में विचरने की बात कही है। शैली भी इसके अपवाद नहीं है लेकिन 'डिपफेंस आपफ पोइट्री' में उनके एतद सम्बन्धी विचारों का सार यही है कि कवि वर्तमान को तो यथार्थ रूप में देखकर ही कुछ सिध्दान्तों की प्रतिष्ठा करता है साथ ही भविष्य को भी वह इसी संदर्भ में वर्तमान के नजरिये से ही देखता है। इसके साथ ही भविष्य के पफल–पफूलों की विकास–प्रक्रिया कके चिर्ाि को भी वर्तमान में ही देखता है।

यथार्थवाद और रोमांसवाद को दो विरोधी धराएँ मानना असंगत होगा। 'रोमांटिक विचारधरा की उत्पत्ति ही कृत्रिामता, असत्यता और झूठ के विरोध में हुई थी। अतः वे स्वाभाविकता और यथाथ्रता के पक्षपाती थे, उनके मत में यथार्थता रोमांसवाद की सार–वस्तु है। वायरन ने सत्य के महत्व का उद्घोष करते हुए कहा था कि Truth is always strange, stranger then fiction अर्थात् सत्य सदा ही विचित्रा होता है, कथा और कहानी से भी विचित्रा।''[11]

प्रसिध्द आलोचक एवरक्राम्बी ने रोमांटिसिज्म की परिभाषा करते हुए बाह्य अनुभवों से आन्तरिक अनुभूतियों की ओर ले जाने वाली यात्राा को महत्व दिया हैं। उनके अनुसार 'जीवन की सम्पूर्ण वास्तविकता में जब सर्वोपरि महत्ता आन्तरिक अनुभव की होती है उसी क्षण रोमांटिसिज्म की इससे अधिक सशक्त परिभाषा नहीं की जा सकती कि वह आन्तरिक अनुभव पर आस्था रखने की प्रवृत्ति है।''[12]

रोमांटिसिज्म की व्याख्या करने वाले एपफ.एल. लुकास का यह विश्वास है कि मनोविज्ञान रोमांटिसिज्म पर सबसे अध्कि प्रकाश डाल सकता है और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ही रोमांटिसिज्म के सभी स्वरूपों का आधर पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। रोमांटिसिज्म की परिभाषा करते हुए इनका बयान है, ''मैंने संकेत किया कि रोमांटिसिज्म में एक सामान्य तत्व है उन बंध्नों से मुक्ति, जो यथार्थवादी समझ और समाज–सम्बन्धी समझ के द्वारा मन के अपेक्षाकृत आदिम और आवेशयुक्त पक्ष पर लगाए जाते हैं।''[13]

''विक्टर ह्यूगो स्वच्छंदतावादित (Romanticism) को 'साहित्य में स्वतंत्रा भावना' तथा वाट्स डंटन 'काव्य और कला में इस कुतुहल की भावना का पूनर्जन्म' कहते हैं। डॉ. हेज भावप्रवण्ता को स्वच्छतावादिता का मूल तत्व मानते हैं। जर्मन विद्वान प्रिफडिक की दृष्टि में स्वच्छंदतावाद मनुष्य की पूर्णता के लिए कभी प्राप्त न होने वाली महत्वाकांक्षा है।''[14]

इस प्रकार संकेत यही मिलते हैं कि पश्चिमी स्वच्छंद काव्यधरा के सभी कवियों, समीक्षकों द्वारा काव्य के जितने लक्षण प्रतिपादित किए गए, उन सभी का मूल स्वर आंतरिक एवं आत्मगत रहा। इतिहास क्रम यही कहता है कि पश्चिम का नव्यशास्त्रावादी आंदोलन नितान्त शास्त्रीय अवधरणा से यद्यपि कुछ मुक्त था, पिफर भी वह आन्तरिकता के स्थान पर बाह्य संरचना को महत्व देता था।

यूरोपीय देशों में तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप ऐसे साहित्य की रचना की जाने लगी, जो अपने रूपाकार में स्वच्छंदतावादी तत्वों को समेटे हुए था। जर्मन, प्रफांस, इंग्लैंड आदि देशों के रचनाकारों ने स्वच्छंदतावादी विशेषताओं से युक्त साहित्य को अध्कि कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया। जर्मनी में हर्डर, गेटे, कोर, लेसिंग, शिलर आदि रचनाकारों को स्वच्छंदतावादी काव्यधरा के प्रतिनिधि कवियों के रूप में स्वीकार किया गया। 18वीं शताब्दी में परंपरावादी क्लासिक काव्य से भिन्न नई धरा के लिए 'रोमांटिक' शब्द का प्रयोग श्लेगल ने ही किया। प्रफांस में स्वच्छंदतावादी विचारधरा का प्रथम सूत्रापात रूसों द्वारा किया गया। प्रफांसीसी दार्शनिक रूसों की इस विचारधरा से समस्त यूरोप प्रभावित हुआ और Romantic Movement के नाम से एक आंदोलन का सूत्रापात हो गया। इंग्लैंड के साहित्यिक क्षेत्रा में यह आंदोलन 1798 में 'लिरिकल बेलेडस' की प्रस्तावना से माना जाता है। और इसी के प्रभाव से प्रफांस, जर्मनी और रूस में भी रोमांटिक आंदोलन की शुरुआत हो गई थी।

स्वच्छंदतावादी कवियों ने सौंदर्य को व्यापक अर्थ–संदर्भों में ग्रहण किया और इसीलिए उन्होंने प्रेम को जीवन में सर्वोपरि माना। इन

कवियों ने प्रमुख रूप से प्रकृति और नारी में सौंदर्य की व्यापक चेतना को देखा और इस उदार धरणा के कारण ही यह काव्यधरा अधिक जीवन्त बन सकी। ''उपर्युक्त परिभाषाओं'' के सामान्य तत्वों के आधर पर कहा जा सकता है कि स्वच्छंदतावाद शास्त्रीयता के विरुध्द विकसित वह पाश्चात्य चिंतन है जो साहित्य के क्षेत्रा में संवेदन और कल्पना, रूढ़िमुक्त स्वच्छंदता, भाषा–शैली की सरलता, सौंदर्य–प्रियता तथा सजीव भावनात्मक प्रकृति चित्राण को प्रश्रय देता है।''[15]

स्वच्छंदतावादी काव्य अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों की उपज है। यही कारण है कि इस काव्य प्रवृत्ति में व्यक्ति के आन्तरिक भावस्थलों और संवेगों की तलाश की जाती रही है। इसी प्रकार के चिंतन से प्रेरित होकर हिंदी रचनाकारों और आलोचकों ने भी स्वच्छंदतावाद को व्यक्तित्व की स्वच्छंदता से जोड़ा है। डॉ. रामधरी सिंह दिनकर का यही विचार है कि रोमांटिक प्रवृत्तियों से युक्त रचनाकार अपनी सीमाओं और संकीर्णताओं से बहुत उफँचे उठ जाता है ''रोमांटिसिज्म के स्पर्श से परम्परावादी कवि भी पहले से कुछ बड़ा हो जाता है और संयमशील महाकवियों में तो रोमांटिक प्रवृत्तियाँ ऐसा चमत्कार उत्पन्न करती हैं जैसे कभी–कभी ही देखने में आता है।''[16]

कवि सुमित्राानन्दन पंत व्यक्तित्व को सत्य और सौंदर्य को प्रतिभा बना देने को ही सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं, ''सच्चा कवि वह है जो अपने सृजन प्रेम से अपना निर्माण कर सकता है। अपने को जीवन के सत्य कवि है।''[17] प्रख्यात आलोचक डॉ. नगेन्द्र भी कवि– व्यक्तत्व की रचना में उपस्थिति महत्त्वपूर्ण मानते हैं, ''अपने को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करना, चाहे वह कर्म द्वारा हो अथवा वाणी द्वारा, या किसी भी अन्य उपकरण के द्वारा ही व्यक्तित्व की सबसे बड़ी सपफलता है।''18

स्वच्छंदतावादी काव्यधरा में मनोवेगों के आधिक्य को डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा कहीं अधिक स्पष्ट अर्थ–संकेत दिया गया है, ''रोमांटिक साहित्य की वास्तविक उत्सभूमि वह मानसिक गठन है, जिसमें कल्पना के अवरिल प्रवाह से घन संश्लिष्ट निखिड़ आवेग की प्रधनता होती है। इस प्रकार कल्पना का अविरल प्रवाह और निविड़ आवेग, ये दो घनीभूत मानसिक वृत्तियां इस व्यक्तित्व प्रधन साहित्यिक रूप की प्रधन जननी है, परंतु यह नहीं समझाना चाहिए कि ये दोनों एक दूसरे से अलग रहकर काम करती हैं।''[19]

स्वच्छंदतावादी काव्यधरा में दार्शनिक तथा कलात्मक पक्ष को भी प्रमुख रूप से उभारा गया है। डॉ. श्रीकृष्ण लाल के अनुसार, ''स्वच्छंदतावाद केवल एक साहित्यिक आंदोलन नहीं था, वरन् वह कलात्मक एवं दार्शनिक आंदोलन भी था। इसमें विश्व की वेदना, दृष्टि का रहस्य, उदात्त भावना तथा प्रेम और वीरता को अपनाने की तीव्र आकांक्षा, अलभ्य श्रेय से उद्भूत एकान्त वेदना और अनन्त निराशा आदि विशिष्ट दार्शनिक वृत्तियों का प्रदर्शन था।''[20]

स्वच्छंदतावादी काव्य–आंदोलन को नई विचाराधरा का प्रतिनिधि भी माना गया। इस संदर्भ में आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने लिखा है, '' स्वच्छंदतावादी कविता तथा काव्य आदर्श नवयुग की समग्र प्रेरणाओं के प्रतिनिधि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हुए थे। उसमें परम्परागत काव्यधरा तथा काव्योपकरणों के विरुध्द विद्रोही उपकरणों की प्रधनता थी। इसकी भाव–सर्जना तथा अलंकरण योजना में नवीनता थी....प्रकृति के निसर्गजात आकर्षण के साथ शब्दावली में नवीन संगति थी।''[21]

स्वच्दंतावाद ने कहीं सामाजिकता की रूढ़ियों की भी एक सीमा को तोड़ा और इसीलिए कहा गया– ''सामाजिक बंध्नों को तोड़ जीवन में स्वच्छंद विचरण करने की लालसा ही स्वच्छंदतावाद है।''[22] विख्यात आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि हिंदी में प्रस्पफुटित स्वच्छंदधरा अगर परंपरागत काव्य संदर्भों से कहीं और गहरे तक जुड़ कर चलती तो उसकी स्वच्छंदता अध्कि सार्थक हो सकती थी। उनके कथनानुसार, ''हमारे साहित्य में रीतिकाल की जो रूढ़ियां हैं, वे किसी और देश की नहीं। उनका विकास इसी देश के साहित्य के भीतर संस्कृत में हुआ है। संस्कृत काव्य और उसी के अनुकरण पर रचित प्राकृत–उपभ्रंश काव्य भी हमारा ही पुराना काव्य है। पर पंडितों और विद्वानों द्वारा रूप ग्रहण करते रहने और कुछ बंध् जाने के कारण जनसाधरण की भावमयी वाग्धरा से कुछ हटा सा लगता है। पर एक ही देश और एक ही जगत के बीच आविर्भूत होने के कारण दोनों में कोई मौलिक पार्थक्य नहीं।

अतः हमारे वर्तमान काव्य क्षेत्रा में यदि अनुभूति की स्वच्छंदता की घरा प्रकृत पध्दति पर अर्थात् परंपरा से चले जाते हुए मौखिक गीतों के मर्मस्थल से शक्ति चलने पाती तो वह अपनी ही काव्य परंपरा होती, अधिक सजीव और स्वंच्छद की हुई।''[21]

द्विवेदी युग के बाद छायावाद के रचनाकाल में आचार्य शुक्ल स्वच्छंदतावाद का प्रभाव तो मानते हैं, पर उसकी अर्थवत्ता और निरन्तरता को कहीं नकारते हैं। इस संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए शुक्ल जी ने लिखा है ''सच्ची और स्वभाविक स्वच्छंदता का यह मार्ग हमारे काव्य क्षेत्रा के बीच चल न पाया। उस समय पिछले संस्कृत काव्य के संस्कारों के साथ पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी–साहित्य क्षेत्रा में आये, जिनका प्रभाव गद्य–साहित्य और काव्य–निर्माण दोनों पर बहुत व्यापक पड़ा। हिंदी में परंपरा से व्यवहृत छन्दों के स्थान पर वृतों का चलन हुआ जिसके कारण संस्कृत पदावली की संभावना बढ़ने लगी। भक्तिकाल और रीतिकाल की परिपाटी के स्थान पर पिछले संस्कृत साहित्य की प(ति की ओर लोगों का ध्यान बाँटा। द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिाका द्वारा बराबर कविता में बोलचाल की सीधे–सादी भाषा आग्रह करते करते रहे जिससे इतिवृतात्मक पद्यों का खड़ी बोली में ढेर लगने लगा। यह तो हुई द्वितीय उत्थान के भीतर की बात। आगे चल कर तृतीय उत्थान में उक्त परिस्थिति के कारण जो प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई वह भी स्वाभाविक स्चच्छंदता की ओर न बढ़ने पाई।''[22]

डॉ. जगदीश गुप्त स्वच्छंदतावाद को आन्तरिक अनुभूतियों का अविरल प्रवाह मानते हैं, ''स्वच्छंद काव्यधरा अन्तः चेतना में उमड़ने वाले अनेक भाव स्रोतों का सम्मिलित अविरल उद्दाम प्रवाह है, जो अव्यक्त प्रेरणा से अव्यक्त की मिलनोत्कंठा निष्प्रयास कवि कंठ से पफूटता है।''[23] आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के अनुसार ''स्वतन्त्राता की सरलता और बंध्नों का त्याग रोमांटिक धरा के मूल में व्याप्त है।''[24]

संदर्भ

1.The old word 'romanz' originally meant 'the speech of the poeople' or 'the vulgar tongue' in contrast with the written form of literary Latin. Its Its meaning then shifted from the language in which the work was written to the work itself"…In madern French a 'roman' is just a novel, whatever its content and structure,

while in modern English the word 'romance' (derived from old French 'romanz') can mean either a medeivenal narrative composition or a lone affair, or again a story about a love affair, generally one of a rather idyllie ar idealized type, sometimes marked by strange or unexpeeted incidents and developments, and 'to romance' has come to mean to make up a story that has no connection with reality".—Encyelopedia Britainnica, Volume-15, Page-1020

2.The Romance languages, all derived from Latin within historical times, from a subgroup of the Italic branch of the Indo-European language family… The major languages of the family include French, Italian, Spanish, Partuguese and romanian… —Encyclopedia Britannica, Volume-15, Page 1025

3.The Shorter Oxford English Dictionary Volume II, page-1750

4.हिंदी साहित्य– कोश, प्रधन सम्पादक– धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ संख्या–676

5."The romantic spirit can be defined as an accentuated predominance of imotional life provoked or direeted by the exercise of imaginatgive vision, and in its turn stimulating or directing such exercise".— A History of English literature, Legoins and Cashian, Page 997

6.रोमांटिक साहित्य शास्त्रा, डॉ. देवराज, पृष्ठ संख्या–109

7.वही

8.रोमांटिक साहित्यशास्त्रा, डॉ. देवराज, पृष्ठ संख्या–106

9.Romanticism can be defined as the egoistical sublime-the cult of original, distinctive personality, the impassioned belief in individualism, the use of poetry primarily for self projection, self-analysis, self assertion and ultimately sometimes for exhibitionism and self-gratification. The first and foremost articles of the Romantic creed was the affirmation of a god like 'I' that makes the poctic world and that in creating poetry, creats itself' keats.— On the Poetry of Keats' : E.G. Pettet, Page-263

10.रोमांटिक साहित्य शास्त्रा, डॉ. देवराज, पृ. संख्या–145

11.It Is when Inner experiencee assumes the first importance in the composite fact of life, that romanticism fact of life, that romanticism appears. Indeed for a general proposition, romanticism can hardly be defined more precisely than a tendency to rely on inner experience.— Romanticism, I. Abererombic, Page-125

12."I have suggested that romanticism have as their common element a lifling of controls the controls exerted on the more primitive and impulsive side of the mind by its sense of reality and its sense of society".— Literature and Pyschology, F.L. Lucas, Page-136

13.आधुनिक हिंदी महाकाव्यों में पाश्चात्य चिंतन, डॉ. रामकिशन सैनी पृ. सं.–128

14.काव्य की भूमिका, डॉ. रामधरी सिंह दिनकर, पृ. सं.–36

15.ज्योत्सना, सुमित्राानंदन पंत, सं.–92 (देखें– स्वच्दंतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. वी. आदेशवर राव, पृ. सं.–61)

16.वही

17.विचार और विवेचन, डॉ. नगेन्द्र, पृ. सं.–54

18.रोमांटिक साहित्य शास्त्रा ;भूमिकाद्ध, डॉ. देवराज उपाध्याय, पृ. सं.–2

19.आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. श्रीकृष्ण लाल, पृ. सं.–37

20.राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबंध, डॉ. किशोरी दास वाजपेयी, पृ. सं.–101

21.हिन्दी का समसामयिक साहित्य, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. सं.–54

22.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. सं. 410

23.हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. सं.– 410–11

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net